227. कुदरतसिंह को राजस्थान की किस हस्तकला में योगदान के लिए पद्मश्री पुरस्कार से अलंकृत किया गया है?

(a) कपड़े की छपाई
(b) मीनाकारी
(c) पीतल पर मुरादाबादी काम
(d) ब्लू पॉटरी

Udyog Nirikshak Exam (Code-38)-2018

Ans. (b) : राजस्थानी हस्तशिल्प कला के प्रसिद्ध जौहरी कुदरत सिंह जयपुर के प्रसिद्ध स्वर्णकार (जौहरी) थे जिन्हें मीनाकारी में विशेषता रखने के कारण पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। इनके पूर्वज प्राचीन काल से मीनाकारी में लगे रहे थे। इनकी मृत्यु 21 मार्च 2002 को हुई थी।

228. राजस्थान की प्रसिद्ध लोक कला ''बेवाण'' है-

(a) खादी के कपड़े पर लोक देवता के जीवन को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करना।
(b) लकड़ी से निर्मित सिंहासन जिस पर ठाकुरजी की मूर्ति को श्रृंगारिक करके बैठाया जाता है।
(c) लकड़ी से निर्मित तलवारनुमा आकृति जिसका उपयोग रामलीला नाटक में किया जाता है।
(d) कपाटों युक्त लकड़ी से निर्मित मंदिरनुमा आकृति।

Basic Computer Anudeshak-18.06.2022

Ans. (b) : बेवाण को देवी विमान या मिनी वुड एचर टेंपल भी कहा जाता है, यह लकड़ी का बना छोटा मंदिर होता है, इसमें लकड़ी का बना सिंहासन भी होता है, जिस पर ठाकुरजी की मूर्ति को श्रृंगारिक करके बैठाया जाता है। यह चित्तौड़गढ़ जिले के बस्सी क्षेत्र की प्रचलित लोक कला है।

229. वनस्थली विद्यापीठ से सम्बन्धित थी-

(a) रतन शास्त्री (b) महिमा देवी
(c) कस्तूरबा गांधी (d) नारायणी देवी

पुस्तकालयाध्यक्ष ग्रेड-III परीक्षा तिथि:19-09-2020

Ans. (a) – वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना 1935 ई. में. पं. हीरालाल शास्त्री एवं उनकी पत्नी रतन शास्त्री ने की थी। तब इसका नाम श्रीशान्ता बाई शिक्षा कुटीर था। 1943 ई. में वनस्थली विद्यापीठ नाम दिया गया। इस विद्यापीठ में पंचमुखी शिक्षा पद्धति पर बल दिया जाता है। इसके तहत शारीरिक शिक्षा, व्यावहारिक शिक्षा, कला शिक्षा, नैतिक शिक्षा और बौद्धिक शिक्षा पर समान रूप से ध्यान दिया जाता है।

230. राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त मोहनलाल किस शिल्प कला से संबंधित है?

(a) थेवा कला (b) उस्ता कला
(c) बंघेज कला (d) मोलेला मृण्मूर्ति कला

Kanisht Abhiyanta (Civil)-18.05.2022

Ans. (d) : राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त मोहनलाल मोलेला मृण्मूर्ति कला से संबंधित है। मोलेला टेराकोटा हस्तशिल्प में उत्कृष्ट कार्य हेतु इन्हे पद्मश्री सम्मान भी दिया गया है। यह मुख्य रूप से चमकीले चित्तल टेराकोटा पट्टिकाओं और स्थानीय देवी-देवताओं की मूर्तियां बनाने तथा अन्य आकर्षक मिट्टी के बर्तन बनाने में प्रसिद्ध है।

231. लप्पा, लप्पी, किरण और गोखरू क्या है?

(a) राजस्थानी फिल्म 'सासु माँ' में किरदार
(b) गोटा की विभिन्न किस्में
(c) शेरवानी के नाम
(d) अधिक उपज देने वाले कीट (किडनी बीन, फेजियोलस एकोनाइट फोलियस) की किस्में

कनिष्ठ अनुदेशक कार्यशाला गणना एवं विज्ञान -2018

Ans. (b) : लप्पा, लप्पी, किरण और गोखरू गोटा का प्रकार है। वस्त्रों को अधिक सुन्दर व आकर्षक बनाने के लिए उस पर कई प्रकार की डिजाइन की जाती है, जैसे- गोटा, कढ़ाई, बाँकड़ी आदि। राजस्थान में गोटा के प्रमुख केन्द्र खंडेला (सीकर), भिनाय (अजमेर) तथा जयपुर है।

232. रावण हत्था को निम्न में से किस से बनाया जाता है?

(a) नारियल (b) इस्पात का बर्तन
(c) काँच का बर्तन (d) नीम की लकड़ी

उद्योग निरीक्षक भर्ती परीक्षा- 2018 (24 जून, 2018)

Ans. (a) – रावण हत्थे को बड़े नारियल की कटोरी पर खाल (चमड़ा) मढ़कर बनाया जाता है। इसकी डांड बाँस की होती है,जिसमें खूटियाँ लगा दी जाती है और 9 तार बांध दिये जाते हैं। ये स्टील के न होकर घोड़े के बालों के बने होते हैं तथा इनपर गज चलाकर ध्वनि उत्पन्न की जाती है। रावण हत्था, राजस्थान में बहु प्रचलित लोक वाद्य हैं। रावण हत्था को ढफ भी कहा जाता है। रावण हत्था भोपों का वाद्य है। पाबूजी की फड़ को बाँचते समय भोपें रावण हत्था का प्रयोग करते है।

233. रावणहत्था क्या है?

(a) चित्रकला की शैली (b) वाद्य यंत्र
(c) पुस्तक (d) कपड़े की एक किस्म

MOTAR VAHAN UPNIRIKSHAN 2011

Ans. (b) : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

234. किस हस्तशिल्पी को वर्ष 2021का 'राजस्थान हस्तशिल्प रत्न पुरस्कार' दिया गया?

(a) गंगा सिंह गौतम (b) हरिओम प्रजापति
(c) बाबूलाल मारोटिया (d) अनुराग कश्यम

संगणक भर्ती परीक्षा-2021 (19 दिसम्बर, 2021)

Ans. (c) – राजस्थान हस्तशिल्प रत्न पुरस्कार 2021 जयपुर के बाबूलाल मारोटिया को प्रदान किया गया। वर्तमान वर्ष 2022 के लिए हस्तशिल्प रत्न पुरस्कार जयपुर के श्री रामस्वरूप शर्मा को प्रदान किया गया।

235. राजस्थान में कोफ्तगिरी के काम के लिए कौन-से शहर प्रसिद्ध है?

(a) बीकानेर एवं जोधपुर
(b) कोटा एवं बून्दी
(c) अलवर एवं जयपुर
(d) झालरापाटन एवं बाराँ

संगणक भर्ती परीक्षा- 2018 (5 मई, 2018)

Ans. (c) – राजस्थान में कोफ्तगिरी के काम के लिए अलवर एवं जयपुर शहर प्रसिद्ध है। कोफ्तगिरी हथियारों को अलंकृत करने की कला है, जो भारत में मुगलों के प्रभाव के कारण उभरी थी। फौलाद अथवा लोहे पर सोने की सूक्ष्म कशीदाकारी कोफ्तगिरी कहलाती है। इसके कलाकार को कोफ्तगर कहा जाता है। कोफ्तगिरी शिल्प का इस्तेमाल ढाल, तलवारों एवं खंजर और अन्य उपयोगी सामग्री जैसे- डिब्बे, बक्से, चाकू आदि निर्माण में किया जाता है।